ISBN : 81-288-1115-0

प्रकाशक : **डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.**
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन : 011-41611861, 40712100
फैक्स : 011-41611866
ई-मेल : sales@dpb.in
वेबसाइट : www.dpb.in
संस्करण : 2010
मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली - 32

BHOJ SAMHITA: BUDHA KHAND
by : Dr. Bhojraj Dwivedi

अनुक्रमणिका

उपचार खंड (द)

विषय प्रवेश

ज्योतिष शास्त्र की प्राचीनता वेदों में सिद्ध है। प्राचीन काल से ही वेद के छह अंगों में ज्योतिष शास्त्र मूर्धन्य स्थान को प्राप्त था। वैदिक काल और वराहमिहिर के बीच 18 ज्योतिषशास्त्र प्रवर्तक धुरंधर आचार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है।

सूर्यः पितामहो व्यासो, वसिष्ठोऽत्रिपराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिः मनुरंगिरा॥
लोमेशः पोलिशश्चैव, च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते, ज्योतिषः शास्त्र प्रवर्तकाः॥
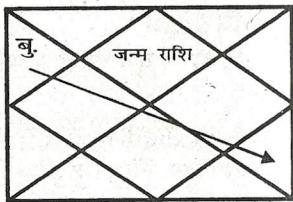
—सूर्य सिद्धान्त (भूमिका)

पर दुर्भाग्य यह है कि इन सब ज्योतिष शास्त्र प्रवर्तक आचार्यों का क्रमिक इतिहास हमें प्राप्त नहीं है। चार-पाँच आचार्यों को छोड़कर बाकी सभी की वास्तविक कृतियां भी ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों को प्राप्त नहीं हैं। केवल नाम ही चर्चित है। कई विद्वानों के ग्रन्थ उपलब्ध है तो उनके काल का पता नहीं। जिनमें **बृहद्पाराशर होराशास्त्र** के रचयिता पराशर, भृगुसंहिता के रचयिता महर्षि भृगु, **सत्यजातकम्** के रचयिता सत्याचार्य, मीनराज कृत **बृहद्यवनजातक** इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष शास्त्र को नई ऊंचाइयां प्रदान करने वाले, तीनों स्कन्धों के निष्णात ज्ञाता दैदीप्यमान सूर्य के समान तेजस्वी वराहमिहिर का सम्पूर्ण साहित्य हमें विधिवत प्राप्त है। परंतु उनका काल भी संदिग्ध है। अंग्रेजों के अनुयायी इतिहासकार उनका जन्म ईसा की पांचवीं शताब्दी का मानते हैं जबकि वराहमिहिर ईसा पूर्व राजा विक्रमादित्य उर्फ चन्द्रगुप्त मौर्य के राजकीय पंडित थे और वर्तमान में महरौली (मिहिरालय) में स्थित कुतुबमीनार उनकी प्राचीन वेधशाला थी। जिस पर जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध ग्रंथ भोज संहिता के लेखक द्वारा लिखा गया जो प्रकाशित हो चुका है।

वैदिक काल के पश्चात वराहमिहिर के पूर्व ज्योतिष की स्थिति
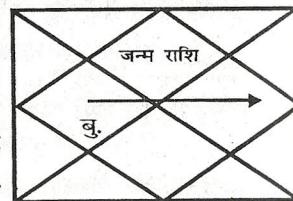
यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रति वराहमिहिर का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने अपने साहित्य में प्रसंगवश उदारता पूर्वक अनेक

5. **भोज संहिता**–तृतीय भावगत गोचर का बुध भाइयों में परस्पर प्रेम बढ़ाएगा। मित्रों से लाभ देगा। बुध की दृष्टि भाग्योदय के नए अवसर प्रदान करेगी। यह गोचर मेषलग्न, कर्कलग्न, धनुलग्न एवं मकरलग्न में ज्यादा शुभफलदायक रहेगा।

गोचर का बुध चतुर्थ स्थान में

1. जन्मराशि से चतुर्थ बुध का भ्रमण हो तो अपने जन और बंधुओं की वृद्धि और धन की प्राप्ति होती है। **–बृहत्संहिता/पृ.599**
2. जन्मराशि में बुध चौथे हो तो धन लाभ, भाग्य वृद्धि, सुख, चित्त में प्रसन्नता, द्रव्य का आगमन होता है। **–ग्रहगोचर ज्योतिषम/पृ.3**
3. धनाप्तिम् (धनलाभ) **–मन्त्रेश्वर (फलदीपिका)/पृ.633**
4. चौथे स्थान में बुध हो तो धनलाभ होगा **–ज्योतिषतत्त्वप्रकाश/पृ.564**
5. **भोज संहिता**–चतुर्थ भाव में बुध का केंद्रगामी गोचर जातक को कीर्ति देगा, वाहन सुख, नौकर सुख में बढ़ोतरी करेगा। ऐश्वर्य बढ़ाएगा। बुध की दशम भाव पर दृष्टि व्यापार सुख में वृद्धि करेगी। सरकारी अधिकारियों से भी लाभ होगा। यह स्थिति **वृषलग्न, मिथुनलग्न, मीनलग्न** में ज्यादा सार्थक होती है।

गोचर का बुध पंचम स्थान में

1. जन्म राशि से पंचम में बुध का भ्रमण हो तो पुत्र और स्त्री के साथ कलह और अपने उद्वेग के कारण सुंदर स्त्री का भी उपयोग नहीं होता। **–बृहत्संहिता/पृ.599**
2. गोचर का बुध यदि पांचवे हो तो सुख का नाश, द्रव्य की हानि, भाइयों में विराध, शत्रु से भय व मानसिक चिंता रहेगी। **–ग्रहगोचर ज्योतिषम्/पृ.4**
3. भार्यातनुजकलहम् (पत्नी पुत्र से कलह) **–मन्त्रेश्वर (फलदीपिका) पृ.633**

4. बुध गोचर में पांचवें स्थान में हो तो पीड़ा देगा। **–ज्योतिषतत्त्वप्रकाश/पृ.564**
5. **भोज संहिता**–गोचर के बुध का परिभ्रमण जब पंचम भाव में होगा तो ज्ञान की वृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के आसार बनेंगे। खासकर

वृषलग्न, मिथुनलग्न, कन्यालग्न, मकरलग्न व कुंभलग्न में परिणाम अत्यन्त शुभ होगें।

गोचर का बुध छठे स्थान में

1. यदि जन्मराशि में छठी राशि में बुध हो तो सौभाग्य, विजय और उन्नति करता है। **–बृहत्संहिता/पृ.599**
2. जन्मराशि में बुध यदि छठे हो तो धनलाभ, भाग्य में वृद्धि, सुख, चित्त में प्रसन्नता रहेगी। **–ग्रहगोचर ज्योतिषम्/पृ.3**
3. विजयम् (विजय) **–मन्त्रेश्वर (फलदीपिका)/पृ.633**
4. गोचर में बुध छठे स्थान में है तो स्थिति लाभ होता है। **–ज्योतिषतत्त्वप्रकाश/पृ.564**
5. **भोज संहिता**–मिथुनलग्न व कन्यालग्न में बुध छठे **लग्नभंगयोग** बनेगा। वृषलग्न व सिंह लग्न में **धनहीनयोग** बनेगा। तुला लग्न व मकरलग्न में बुध छठे। **भाग्यहीन योग** बनाएगा। मेष व कर्क लग्न में बुध छठे **पराक्रम अंग** योग बनाता है। ऐसी स्थिति में छठे बुध के शुभ परिणाम संदिग्ध है। फिर भी मेषलग्न, कर्कलग्न, वृश्चिक से मकरलग्न में विपरीत राजयोग के कारण, दुःस्थान का स्वामी दुःस्थान में होने से शत्रुओं पर विजय मिल सकती है।
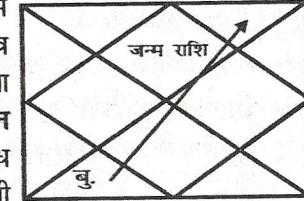
गोचर का बुध सातवें स्थान में

1. बुध का भ्रमण जन्मराशि (चंद्र) से सातवीं राशि में हो, तो विवर्णता और कलह करता है। **–बृहत्संहिता/पृ.599**
2. यदिं गोचर का बुध जन्मचंद्र से सातवें होते द्रव्य की हानि, भाइयों से विरोध, शोक, शरीर में भारी कष्ट, शत्रुभय रहेगा। **–ग्रहगोचर ज्योतिषम्/पृ.4**
3. विरोधम् (विरोध, झगड़ा) **–मन्त्रेश्वर (फलदीपिका)/पृ.633**
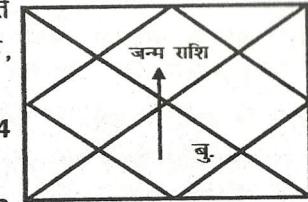
4. गोचर में बुध सातवें स्थान में हो तो पीड़ा।**–ज्योतिषतत्त्वप्रकाश/पृ.564**
5. **भोज संहिता**–सप्तम भाव में बुध का परिभ्रमण पत्नी सुख में शुद्धि कराता है। गुप्त समझौतों से जातक को लाभ होता है। बुध एक शुभग्रह है। शुभग्रह
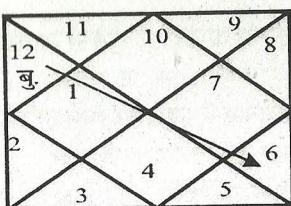
बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य–'भोज संहिता'** के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। चतुर्थ स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। दोनों ग्रह यहां बैठकर दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। **'कुलदीपक योग'** के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की किस्मत का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र–**बुध के साथ चंद्र होने से जातक को माता-पिता की संपत्ति नहीं मिलेगी व विवाद रहेगा।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ मंगल होने से जातक को माता-पिता की संपत्ति मिलेगी।
4. **बुध+बृहस्पति–**बुध के साथ बृहस्पति **'हंस योग'** बनाएगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, सुख-सुविधाओं से युक्त होगा।
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा। जातक राजा के समान वैभव संपन्न होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **बुध+शनि–**बुध के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी।
7. **बुध+राहु–**बुध के साथ राहु भौतिक सुखों में बिगाड़ करता है।
8. **बुध+केतु–**बुध के साथ केतु वाहन दुर्घटना देता है।

उपाय– 1. माणक+पुखराज+मूंगा का त्रिशक्ति लॉकेट धारण करें।
2. अपने वाहन का रंग हरा रखें।
3. मकान की दीवारें व पर्दों में हरे रंग का प्रयोग करें।
4. भोजन में मूंग की दाल का अधिक प्रयोग करें।
5. गणपति स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
6. घर में प्रवेश द्वार पर हरे रंग के गणपति लगावें।

मकरलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मकरलग्न में बुध षष्ठेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि का होकर **'कुलदीपक योग'** बना रहा है। ऐसे जातक को मकान-वाहन, माता-पिता, जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख प्राप्त

होता है। **लोमेश संहिता** के अनुसार ऐसा जातक राजमंत्री, सेना का अधिपति, राज (सरकार) में उच्च पद, सम्मान को प्राप्त करता है। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–बुध यहां मिथुन राशि से एकादश कन्या राशि से आठवें स्थान पर होकर दशम भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक को रोजी-रोजगार, व्यापार में पूरा-पूरा फायदा होगा।

निशानी–जातक के स्वयं की तुलना में जातक के माता-पिता अधिक धनी, सुखी व यशस्वी होंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतद्रशा में जातक को भौतिक सुख, उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य–'भोज संहिता'** के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। चतुर्थ स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्ठेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। सूर्य के कारण **'रविकृत राजयोग'** तथा बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा व कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। राज (सरकार) से लाभ उठाएगा। उत्तम वाहन एवं मकान सुख को प्राप्त करता हुआ समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति कहलाएगा।
2. **बुध+चंद्र–**बुध के साथ चंद्रमा जातक को माता का सुख तो देगा पर माँ बीमार रहेगी अथवा जातक के अपनी माता से विचार कम मिलेंगे।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ यहां मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं उच्च वाहन का स्वामी होगा।
4. **बुध+बृहस्पति–**बुध के साथ बृहस्पति जातक को मकान का सुख देता है।
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन सुख देता है।
6. **बुध+शनि–**बुध के साथ शनि नीच का होते हुए भी जातक भौतिक ऐश्वर्य से संपन्न, उत्तम वाहन का स्वामी होगा पर वाहन खर्चा बहुत कराएगा।
7. **बुध+राहु–**बुध के साथ राहु वाहन दुर्घटना का संकेत देता है।
8. **बुध+केतु–**बुध के साथ केतु होने से जातक की माता लम्बी बीमारी से ग्रसित रहेगी।

उपाय– 1. जिरकान+पन्ना+नीलम का त्रिशक्ति लॉकेट धारण करें।
2. हरे रंग की वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग करें।
3. बुधवार का व्रत, उपवास, आरती करें।
4. गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।
5. हरी घास के मैदान में नंगे पांव चलें।